राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

पुस्तकानि विना वाणीं, सर्वमाहुः स्वहृद्-गतम् ।
इमानि ज्ञान – केन्द्राणि, सर्वोपकारकाणि च ॥२८९॥

पुस्तकें बिना वाणी के भी अपने हृदय की सब-कुछ बातें कह देती हैं । ये ज्ञान का केन्द्र हैं और सब का उपकार करने वाली हैं ।

Voiceless books can also express all the hearts desires. They are the centre of knowledge and beneficial to all.

पूरयन्ति प्रतिज्ञां स्वां, पूर्णतो ये जना ननु ।
सम्मान्याश्चाभिनन्द्याश्च, भवन्ति किमु ते नहि ? ॥२९०॥

जो व्यक्ति अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर देते हैं, क्या वे सम्माननीय और अभिनन्दनीय नहीं बन जाते हैं ?

Isn't the person who fulfils his promise, honourable and admirable?

पूर्णं वेतनमादाय, कार्यं कुर्वन्ति ये नहि ।
ये चेदं न निरीक्षन्ते, दण्डनीया न ते किमु ? ॥२९१॥

जो पूरा वेतन लेकर भी काम नहीं करते और जो इसका निरीक्षण नहीं करते- क्या वे दोनों दण्डनीय नहीं हैं ?

Aren't both punishable, the one who does not work although taking the full salary and the one who doesn't oversee/inspect him?

पूर्णात्मीतया सार्धं, पशुन् रक्षन्तु मानवाः ! ।

तेषु नष्टेषु किं हानिर्, भवतां भविता नहि ? ॥२९२॥

अरे मानवों ! पूर्ण आत्मीयता के साथ आप अपने पशुओं की रक्षा किया करो । उन पशुओं के नष्ट हो जाने पर क्या आपकी हानि नहीं होगी ?

Hey people! With full hearts protect your animals. Will you not be harmed if they are gone/destroyed/killed?

पृथ्व्या जलं यथा सूर्यो, गृहीत्वाऽति प्रवर्षति ।

तथा दत्तकरैः राजा, प्रजां रञ्जयते सदा ॥२९३॥

जैसे सूर्य पृथ्वी से जल लेकर उसे अति मात्रा में पृथ्वी पर बरसा देता है, वैसे ही राजा भी अपनी प्रजा से लिये हुए करों से प्रजा को सदा प्रसन्न करता है ।

Like the Sun who takes the water from the Earth and then returns it manifolds as rain, the king keeps his subjects always happy with the acquired tax.

प्रजानुरञ्जनं स्यान्न, कठोरं शासनं विना ।

सरलाङ्गुलिना नैव, घृतं निःसार्यते क्वचित् ॥२९४॥

बिना कठोर शासन के जनता का अनुरञ्जन नहीं होता । सीधी अङ्गुलि से कहीं घी नहीं निकाला जाता है ?

Without strict governance people will not be pleased. Where can the ghee be taken out with a straight finger?

प्रजायां सर्वकारे च, सौमनस्य – प्रसारकाः ।

पत्रकारा न केषां स्युः, प्रशंसा–भाजनानि हि ? ॥२९५॥

जनता और सरकार में सौमनस्य का प्रसार करने वाले पत्रकार किनके प्रशंसा के पात्र नहीं होते ?

Who does not praise the journalist who spreads harmony between the people and the government?